1956 Significance of the Namokar Mantra in Sanmati Sandesh 1956

(also in Anekant 1957, and two drafts)

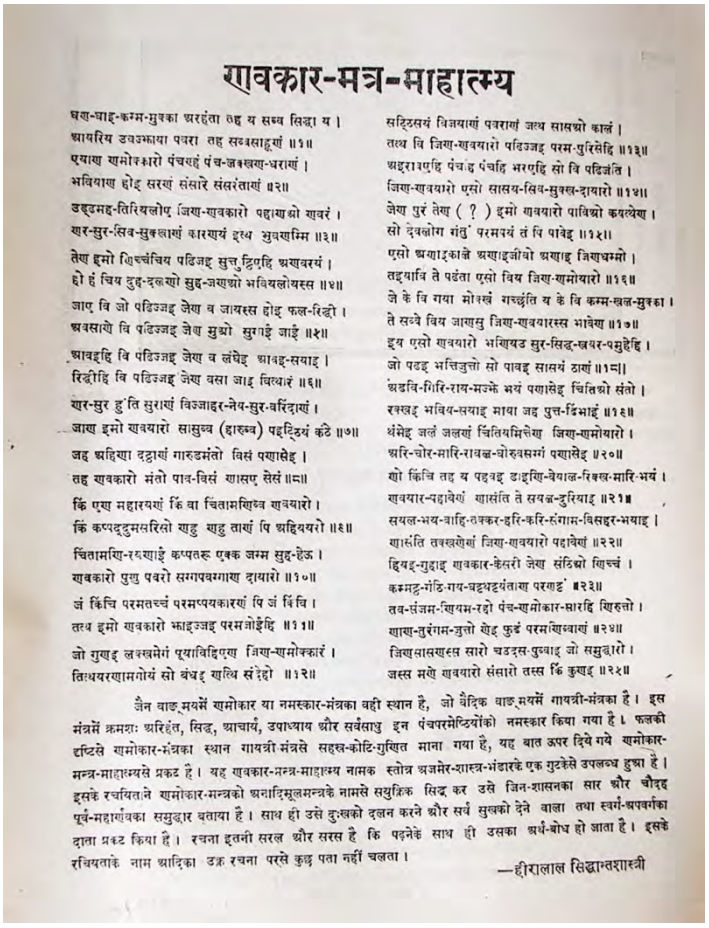

णवकार-मन्त्र-माहात्म्य

घण-घाइ-कम्म-मुक्का अरहंता तह य सव्व सिद्धा य ।
आयरिय उवज्झाया पवरा तह सव्वसाहूणं ॥१॥
एयाण णमोक्कारो पंचण्हं पंच-लक्खण-धराणं ।
भवियाण होइ सरणं संसारे संसरंताणं ॥२॥
उड्ढमह-तिरियलोए जिण-णवकारो पहाणओ णवरं ।
णर-सुर-सिव-सुक्खाणं कारणयं इत्थ भुवणम्मि ॥३॥
तेण इमो णिच्चंचिय पढिजइ सुत्तुट्ठिएहिं अणवरयं ।
हो हं चिय दुह-दलणो सुह-जणओ भवियलोयस्स ॥४॥
जाए वि जो पढिज्जइ जेण व जायस्स होइ फल-रिद्धी ।
अवसाणे वि पढिज्जइ जेण मुओ सुगाई जाई ॥५॥
आवइहि वि पढिज्जइ जेण व लंघेइ आवइ-सयाइ ।
रिद्धीहि वि पढिज्जइ जेण वसा जाइ वित्थारं ॥६॥
णर-सुर हुंति सुराणं विज्जाहर-नेय-सुर-वरिंदाणं ।
जाण इमो णवयारो सासुव्व (हारुव्व) पइट्ठियं कंठे ॥७॥
जह अहिणा दट्ठाणं गारुडमंतो विसं पणासेइ ।
तह णवकारो मंतो पाव-विसं णासए सेसं ॥८॥
किं एण महारयणं किं वा चिंतामणिव्व णवयारो ।
किं कप्पद्दुमसरिसो णहु णहु ताणं पि अहिययरो ॥९॥
चिंतामणि-रयणाइं कप्पतरू एक्क जम्म सुह-हेऊ ।
णवकारो पुणु पवरो सग्गपवग्गाण दायारो ॥१०॥
जं किंचि परमतच्चं परमप्पयकारणं पि जं किंचि ।
तत्थ इमो णवकारो झाइज्जइ परमजोईहि ॥११॥
जो गुणइ लक्खमेगं पूयाविहिएण जिण-णमोक्कारं ।
तित्थयरणामगोयं सो बंधइ णत्थि संदेहो ॥१२॥
सट्ठिसयं विजयाणं पवराणं जत्थ सासओ कालं ।
तत्थ वि जिण-णवयारो पढिज्जइ परम-पुरिसेहिं ॥१३॥
अइरावएहि पंचहि पंचहि भरएहि सो वि पढिजंति ।
जिण-णवयारो एसो सासय-सिव-सुक्ख-दायारो ॥१४॥
जेण पुरं तेण (?) इमो णवयारो पाविओ कयत्थेण ।
सो देवलोग गंतुं परमपयं तं पि पावेइ ॥१५॥
एसो अणाइकाले अणाइजीवो अणाइ जिणधम्मो ।
तइयावि ते पढंता एसो विय जिण-णमोयारो ॥१६॥
जे के वि गया मोक्खं गच्छंति य के वि कम्म-खल-मुक्का ।
ते सव्वे विय जाणसु जिण-णवयारस्स भावेण ॥१७॥
इय एसो णवयारो भणियउ सुर-सिद्ध-खयर-पमुहेहिं ।
जो पढइ भत्तिजुत्तो सो पावइ सासयं ठाणं ॥१८॥
अडवि-गिरि-राय-मज्झे भयं पणासेइ चिंतिओ संतो ।
रक्खइ भविय-सयाइ माया जह पुत्त-डिंभाइं ॥१९॥
थंभेइ जलं जलणं चिंतियमित्तेण जिण-णमोयारो ।
अरि-चोर-मारि-रावल-घोरुवसग्गं पणासेइ ॥२०॥
णो किंचि तह य पहवइ डाइणि-वेयाल-रिक्ख-मारि-भयं ।
णवयार-पहावेणं णासंति ते सयल-दुरियाइ ॥२१॥
सयल-भय-वाहि-तक्कर-हरि-करि-संगाम-विसहर-भयाइ ।
णासंति तक्खणेणं जिण-णवयारो पहावेणं ॥२२॥
हियइ-गुहाइ णवकार-केसरी जेण संठिओ णिच्चं ।
कम्मट्ठ-गंठि-गय-घट्टथट्टयं ताण परणट्ठं ॥२३॥
तव-संजम-णियम-रहो पंच-णमोकार-सारहि णिरुत्तो ।
णाण-तुरंगम-जुत्तो णेइ फुडं परमणिव्वाणं ॥२४॥
जिणसासणस्स सारो चउदस-पुव्वाइ जो समुद्धारो ।
जस्स मणे णवयारो संसारो तस्स किं कुणइ ॥२५॥

जैन वाङ्मयमें णमोकार या नमस्कार-मंत्रका वही स्थान है, जो वैदिक वाङ्मयमें गायत्री-मंत्रका है। इस मंत्रमें क्रमशः अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और सर्वसाधु इन पंचपरमेष्ठियोंको नमस्कार किया गया है। फलकी दृष्टिसे णमोकार-मंत्रका स्थान गायत्री-मंत्रसे सहस्र-कोटि-गुणित माना गया है, यह बात ऊपर दिये गये णमोकार-मन्त्र-माहात्म्यसे प्रकट है। यह णवकार-मन्त्र-माहात्म्य नामक स्तोत्र अजमेर-शास्त्र-भंडारके एक गुटकेसे उपलब्ध हुआ है। इसके रचयिताने णमोकार-मन्त्रको अनादिमूलमन्त्रके नामसे सयुक्तिक सिद्ध कर उसे जिन-शासनका सार और चौदह पूर्व-महार्णवका समुद्धार बताया है। साथ ही उसे दुःखको दलन करने और सर्व सुखको देने वाला तथा स्वर्ग-अपवर्गका दाता प्रकट किया है। रचना इतनी सरल और सरस है कि पढ़नेके साथ ही उसका अर्थ-बोध हो जाता है। इसके रचियताके नाम आदिका उक्त रचना परसे कुछ पता नहीं चलता।

—हीरालाल सिद्धान्तशास्त्री

ॐ अर्हम्

वार्षिक मूल्य ६)

एक किरण का मूल्य ।।)

वर्ष १४ किरण, ६ | वीरसेवामन्दिर, २१, दरियागंज, देहली | माघ, वीरनिर्वाण-संवत् २४८३, विक्रम संवत् २०१३ | जनवरी'५७

(नेमिचन्द्रयति-विरचितम्)

सुप्रभात-स्तोत्रम्

चन्द्रार्क-शक्र-हरि-विष्णु-चतुर्मुखाद्यास्तीक्ष्णैः स्ववाण निवहैर्विनिहत्य लोकम् ।
व्याजृम्भतेऽहमिति नात्र परोऽस्ति कश्चित्तं मन्मथं जितवतस्तव सुप्रभातम् ॥ १ ॥
गन्धर्व-किन्नर-महोरग-दैत्य-यक्ष-विद्याधरामर-नरेन्द्र-समर्चिताङ्घ्रिः ।
संगीयते प्रथित-तुम्बुर-नारदैश्च कीर्त्तिः सदैव भुवने तव सुप्रभातम् ॥ २ ॥
अज्ञान-मोह-तिमिरौघ-विनाशकस्य सज्ज्ञान-चारु-वलि-भूपित-भूपितस्य ।
भव्याम्बुजानि नियतं प्रतिबोधकस्य श्रीमज्जिनेन्द्र दिनकृत्तव सुप्रभातम् ॥ ३ ॥
श्वेतातपत्र-हरिविष्टर-चामरौघ-भामण्डलेन सह दुन्दुभि-दिव्यभाषाऽ- ।
शोकाग्र-देवकर-मुक्त-सुपुष्पवृष्टी देवेन्द्र-पूजितवतस्तव सुप्रभातम् ॥ ४ ॥
तृष्णा-क्षुधा-जनन-विस्मय-राग-मोह-चिन्ता-विषाद-मद-खेद जरा-रुजौघाः ।
प्रस्वेद-मृत्यु-रति-रोष-भयानि निद्रा देहे न सन्ति हि यतस्तव सुप्रभातम् ॥ ५ ॥
भूतं भविष्यदपि सम्प्रति वर्तमानं ध्रौव्यं व्ययं प्रभवमुत्तममप्यशेषम् ।
त्रैलोक्य-वस्तु-विषयं सविशेषमित्थं जानासि नाथ ! युगपत्तव सुप्रभातम् ॥ ६ ॥
स्वर्गापवर्ग-सुखमुत्तममव्ययं यत् तद्देहिनां सुभजतां विदधासि नाथ !
हिंसाऽनृतान्यवनिता-परवित्त-सेवा-संत्यागकेन हि यतस्तव सुप्रभातम् ॥ ७ ॥
संसार-घोर-तर-वारिधि-यानपात्र ! दुष्टाष्टकर्म-निकरेन्धन-दीप्त-वन्हे !
अज्ञान-मूढ-मनसां विमलैकचक्षुः श्रीनेमिचन्द्र-यतिनायक ! सुप्रभातम् ॥ ८ ॥
प्रध्वस्तं परतारकमेकान्त-ग्रह-विवर्जितं विमलम् ।
विश्वतमः-प्रसर-हरं श्रुतप्रभातं जयति विमलम् ॥ ९ ॥

(बड़ाधड़ा पंचायती मन्दिर अजमेरके शास्त्र-भण्डारसे प्राप्त)

णवकार-महिमा
(नमस्कार-मंत्र-माहात्म्यम् ।)

घण-घाइ-कम्म-मुक्का अरहंता तह य सव्वसिद्धा य।
आयरिय उवज्झाया पवरा तह सव्वसाहूणं ॥१॥
एयाण णमोक्कारो पंचण्हं पंचलक्खण-धराणं।
भवियाण होइ सरणं संसारे संसरंताणं ॥२॥
उड्ढ-मह-तिरियलोए जिण-णवकारो पहाणओ णवरं।
णर-सुर-सिव-सुक्खाणं कारणयं इत्थ भुवणम्मि ॥३॥
तेण इमो णिच्चं चिय पढिज्जइ सुत्तुट्ठिएहि अणवरयं।
होउं चिय दुह-दलणो सुह-जणओ भवियलोयस्स ॥४॥
जोई वि जो पढिज्जइ जेण व जोयस्स होइ फल-रिद्धी।
अवसाणे वि पढिज्जइ जेण मुओ सुग्गई जाई ॥५॥
आवइहि वि पढिज्जइ जेण य लंघेइ आवइ-सयाइं।
रिद्धीहि वि पढिज्जइ जेण वसा जाइ वित्थारं ॥६॥
णर-सुर कुंति सुराणं विज्जाहर-नेय-सुर-वरिंदाणं।
जाण इमो णवकारो सासुव्व, पइट्ठियं कंठे ॥७॥
जह अहिणा दट्ठाणं गारुड मंतो विसं पणासेइ।
तह णवकारो मंतो पाव-विसं णासए सेसं ॥८॥
किं एण महारयणं किं वा चिंतामणिव्व णवयारो।
किं कप्पदुमसरिसो णहु णहु ताणं पि अहिययरो ॥९॥
चिंतामणि-रयणाई कप्पतरू एक्कजम्म सुह-हेऊ।
णवकारो पुणु पवरो सग्गापवग्गाण दायारो ॥१०॥
जं किंचि परमतच्चं परमप्पयकारणं पि जं किंचि।
तत्थ इमो णवकारो झाइज्जइ परमजोईहिं ॥११॥
जो गुणइ लक्खमेगं पूयाविहिएण जिण-णमोक्कारं।
तित्थयर णामगोयं सो बंधइ णत्थि संदेहो ॥१२॥
सड्ढिसयं विजयाणं पवराणं जत्थ सासओ कालं।
तत्थ वि जिण-णवयारो पढिज्जइ परमपुरिसेहिं ॥१३॥

अइरावएहि पंचहि पंचहि भरहेहि सो वि पढिज्जंति।
जिण-णवयारो एसो सासय-सिव-सुक्ख-दायारो ॥१४॥
जेण पुरं तेण (   ) इमो णवयारो पाविओ कयत्थेण।
सो देवलोग गंतुं परमपयं तं पि पावेइ ॥१५॥
एसो अणाइकाले अणाइजीवो अणाइ जिणधम्मो।
तइयावि ते पढंता एसो चिय जिण-णमोयारो ॥१६॥
जे के वि गया मोक्खं गच्छंति य के वि कम्म-मल-मुक्का।
ते सव्वे चिय जाणसु जिण-णवयारस्स भावेण ॥१७॥
इय एसो णवयारो भणियउ सुर-सिद्ध-खयर-पमुहेहि।
जो पढइ भत्तिजुत्तो सो पावइ सासयं ठाणं ॥१८॥
अडवि-गिरि-राय-मज्झे भयं पणासेइ चिंतिओ संतो।
रक्खइ भविय-सयाइं माया जह पुत्त-डिंभाइं ॥१९॥
थंभेइ जलं जलणं चिंतियमित्तेण जिण-णमोयारो।
अरि-चोर-मारि-राउल-घोरुवसग्गं पणासेइ ॥२०॥
नो किंचि तह य पहवइ डाइणि-वेयाल-रक्खस-मारि-भयं।
णवयार-पहावेणं णासंति ते सयल-दुरियाइं ॥२१॥
सयल-भय-वाहि-तक्कर-हरि-करि-संगाम-विसहर-भयाइं।
णासंति तक्खणेणं जिण-णवयारो पहावेणं ॥२२॥
हियइ गुहाइ णवकार-केसरी जेण संठिओ णिच्चं।
कम्मट्ठ-गंठि-गय-घट्टथट्टयं ताण परणट्ठं ॥२३॥
तव-संजम-णियम-रहो पंच-णमोकार-सारहि णिउत्तो।
णाण-तुरंगम-जुत्तो णेइ फुडं परमणिव्वाणं ॥२४॥
जिण सासणस्स सारो चउदस-पुव्वाइ जो समुद्धारो।
जस्स मणे णवयारो संसारो तस्स किं कुणइ ॥२५॥

—०—

नमस्कार-मंत्र-माहात्म्य

घन-घाति~~कर्म~~-चतुष्टयसे रहित अरिहंत, तथा सर्व कर्मोंसे विमुक्त सर्व सिद्ध, ~~अ~~ सर्व साधुओंमें प्रवर-श्रेष्ठ आचार्य, उपाध्याय और साधु इन पांच प्रकारके स्वरूपको धारण करनेवाले पांचों परमेष्ठियोंको किया गया नमस्कार संसारमें परिभ्रमण करनेवाले भव्य जीवोंके शरण है॥ ॥१-२॥

ऊर्ध्वलोक, अधोलोक और तिर्यक्लोक इन तीनों ही लोकोंमें यह जिन-नमस्कार ही प्रधान है। और खास बात यह है कि इस तीन भुवनमें मनुष्योंके सुखोंका, देवोंके सुखोंका और शिवके सुखोंका कारण यह पंच नमस्कार-मंत्र ही है। इसलिए इसे नित्य ही सो करके उठनेके साथ ही लोगोंको अनवरत (बिना किसी नागाके) पढ़ना चाहिए। यही पंच नमस्कार-मंत्र भव्य लोगोंके दुःखोंका दलन करनेवाला और सुखोंका उत्पन्न करनेवाला है॥३-४॥

किसीके उत्पन्न होनेपर जो इस मंत्रको पढ़ता है, उससे उत्पन्न हुए बालक सुफल सिद्धि होती है, अथवा ऋद्धिरूप फलकी प्राप्ति होती है। जीवनके अन्तमें भी यह मंत्र पढ़ना चाहिए, जिससे कि मर कर यह जीव सद्-गतिको प्राप्त होता है॥५॥

आपद्-ग्रस्त पुरुषोंको भी यह मंत्र पढ़ना चाहिए, जिससे कि वे सैकड़ों आपत्तियोंको पार कर देते हैं। ऋद्धिसम्पन्न पुरुषोंको भी यह मंत्र पढ़ना चाहिए, जिससे कि उनकी ऋद्धि और भी विस्तारको प्राप्त हो॥६॥

जिन जीवोंने इस नमस्कार मंत्रको हारके समान अपने कण्ठमें धारण किया है, उन्हें मनुष्य, देव और विद्याधरोंकी उत्कृष्ट पदवियां प्राप्त होती हैं॥७॥

जिस प्रकार गारुड मंत्र सांपके द्वारा काटे हुए जीवोंके विषका विनाश करता है, उसी प्रकार यह नमस्कार मंत्र समस्त पापरूप विषका नाश कर देता है॥८॥

क्या यह नमस्कार मंत्र महारत्नके समान है? अथवा क्या चिन्तामणिके समान है, या कल्पवृक्षके समान है? नहीं, नहीं; यह मंत्र तो उन सबसे बहुत अधिक श्रेष्ठ है। ~~भव~~ क्योंकि, चिन्तामणि, आदि महारत्न और कल्पवृक्ष तो एक जन्ममें ही सुखके कारण हैं। किन्तु नमस्कार मंत्र भव-भवमें स्वर्गादिका और अपवर्गका श्रेष्ठ दातार है॥९-१०॥

जो कुछ भी परम तत्त्व हैं और जो कुछ भी परम पदके कारण हैं, उन सबमें यह नमस्कार मंत्र (सर्वश्रेष्ठ होनेसे) परम योगियोंके द्वारा ध्यान किया जाता है। ॥११॥

जो भव्य पूजा विधि-पूर्वक जिन-नमस्कार मंत्रका एक लाख प्रमाण जाप करता है, वह तीर्थंकर नामगोत्र कर्मका बन्ध करता है, इसमें कोई सन्देह नहीं है ॥१२॥

पंच विदेह-सम्बन्धी जो एक सौ साठ विजय अर्थात् आर्य क्षेत्र हैं और जहां पर सदा चौथा काल विद्यमान है; वहां पर भी यह नमस्कार मंत्र परम पुरुषोंके द्वारा नित्य ही पढ़ा जाता है ॥१३॥

तथा अढ़ाई द्वीप-सम्बन्धी पांच ऐरावत और पांच भरत क्षेत्रमें रहनेवाले मनुष्योंके द्वारा शाश्वत शिव सुखका देनेवाला यह जिननमस्कार मंत्र सदा पढ़ा जाता है ॥१४॥

जिस भाग्यशाली कृतार्थ मनुष्यने इस नमस्कार मंत्रको प्राप्त किया है, वह देवलोकको प्राप्त करके अन्तमें नियमसे परम पदको प्राप्त करता है ॥१५॥

यह जिन-नमस्कार अनादि मूलमंत्र है, क्योंकि जिनधर्म अनादि है, जीव अनादि हैं और अनादि कालसे यह जीवोंके द्वारा पढ़ा जा रहा है ॥१६॥

जो कितने ही जीव पूर्वकालमें मोक्ष गये हैं और जो दुष्टाष्ट कर्मोंसे विमुक्त होकर आज मोक्ष जा रहे हैं, वह सब जिननमस्कार मंत्रका ही प्रभाव जानना चाहिए। ॥१७॥

इस प्रकार यह नमस्कार मंत्र महामहिमारूपसे देव, सिद्ध और विद्याधरादि प्रमुख पुरुषोंके द्वारा कहा गया है। जो भक्तियुक्त होकर इसे पढ़ता है, वह शाश्वत स्थान मोक्षपदको पाता है ॥१८॥

अटवी, पर्वत और राज्यके मध्यमें अवस्थित पुरुषके, द्वारा आपत्तिके समय चिन्तवन किया गया यह मंत्र उनके भयका विनाश कर देता है। और जिस प्रकार माता अपने पुत्र-पौत्रादिकोंकी रक्षा करती है, उसी प्रकार यह महामंत्र सकल भव्य जीवोंकी रक्षा करता है ॥१९॥

चिन्तवन मात्रसे यह जिन नमस्कार मंत्र जल और ज्वलनको स्तम्भित कर देता है, तथा शत्रु, चोर, मारी, राजकुल-(राजा-)कृत घोर उपसर्गोंका विनाश कर देता है ॥२०॥

नमस्कार मंत्रके प्रभावसे डाकिनी, वेताल, राक्षस, ग्रह, मारी आदिका कुछ भी भय नहीं रहता है। तथा स्मरण करनेवालेके सर्व पाप नष्ट हो जाते हैं ॥२१॥

जिन-नमस्कारके प्रभावसे समस्त भय, और व्याधियां, तथा चोर, सिंह, हस्ती, संग्राम और सर्पादिके भय तत्क्षण विनष्ट हो जाते हैं ॥२२॥

जिस भव्य जीवने अपने हृदयरूपी गुफामें नमस्कार-मंत्ररूपी केसरी (सिंह) को नित्य संस्थित किया है, वह कर्माष्टक-ग्रन्थिरूप गजोंके मानको मर्दन करनेके लिए सदा उद्यत रहता है ॥२३॥

P.T.O.

मंगल प्रभात ५ बजे
चौरासी मथुरा
६-११-८०

पंच नमस्कार मंत्र का रहस्य

णमोकार मंत्र में जो पांच परमेष्ठियों को नमस्कार किया गया है, उसका असली रहस्य नर से नारायण और किंकर या अकिंचित्कर से तीर्थंकर बनाना है।

शंका - सो कैसे ?

समाधान - सुनिये — महान मोह-माया में फंसे और आत्मस्वरूप को भूले हुए उनके लिये यह ज्ञान कराना सर्वप्रथम आवश्यक होता है कि तू अकिंचित्कर या दरिद्र नहीं है, किन्तु अक्षय अनन्त गुणों का भंडार है। जिस प्रकार कि सिद्ध परमेष्ठी। सिद्ध परमेष्ठी का आदर्श सदा सम्मुख रखना है, इसके लिए उनका स्मरण प्रतिदिन, नहीं नहीं; प्रतिपल आवश्यक है। मैं सिद्ध समान हूं, इस अपूर्व बात का ज्ञान कराने वाले, हितोपदेशक अरहंत परमेष्ठी हैं। उन्होंने ही महान तपश्चरण के पश्चात् उपलब्ध दिव्यज्ञान द्वारा यह जाना कि संसार के प्रत्येक प्राणी में नर से नारायण और किंकर से तीर्थंकर बनने की योग्यता विद्यमान है, अतः ठौर-ठौर विहार कर जगत के अज्ञानी जीवों को संबोधा — हे प्राणियो, अपनी अनादिकालीन घोर निद्रा को छोड़ो, जागो, और अन्तर्दृष्टि को खोलकर देखो कि तुम्हारे भीतर कितने अक्षय, दिव्य, प्रकाशमान रत्न भरे हुए हैं। इस लोकोत्तर उपकार करने की अपेक्षा अरहन्त परमेष्ठी का भी अहर्निश स्मरण करना आवश्यक हो जाता है।

परन्तु 'मैं अक्षय अनन्त गुणों का भंडार हूं', इतना ज्ञान लेने मात्र से भी तो काम नहीं चलता है, ~~अतः~~ उसके लिए उस मार्ग पर भी तो चलना जरूरी है, जिससे कि यह अकिंचित्कर से तीर्थंकर बन ~~सकता~~ जाता है, ~~अतएव~~ इसके लिए ही अपने संघ में रखकर सदाचार के आचरण कराने वाले आचार्य परमेष्ठी का स्मरण आवश्यक है। आत्म-विकास के क्रमिक विकास का शिक्षण देने के कारण उपाध्याय परमेष्ठी का सामीप्य भी इस हेतु से जरूरी हो जाता है। और जो उस सदाचार के मार्ग पर स्वयं चल कर संसार के सामने उसका मूर्तिमान् रूप रख रहे हैं; उन आत्मस्वरूप के साधक साधुओं का सान्निध्य भी अत्यावश्यक है।

इस प्रकार प्रतिदिन और प्रतिक्षण पांचों ही परमेष्ठियों का स्मरण और वंदन जरूरी है।

धर्मशिक्षा – जाव जरा न पीडेइ, वाही जाव न वड्ढई।
जाविंदिया न हायंति, ताव धम्मं समायरे॥ दशवै० ८.३६

अहिंसा * सव्वे जीवा वि इच्छंति, जीविउं न मरिज्जिउं।
शिक्षा – तम्हा पाणिवहं घोरं निग्गंथा वज्जयंति णं॥ दश. ६.११.

सत्यशिक्षा – दिट्ठं मियं असंदिद्धं पडिपुण्णं वियंजियं।
अयंपिरमणुव्विग्गं भासं निसिर अत्तवं॥ दश. ८.४९.
तहेव काणं काणे त्ति पंडगं पंडगे त्ति वा।
वाहियं वा वि रोगि त्ति तेणं चोरे त्ति नो वए॥ दश. ७.१२

अचौर्य शिक्षा – तं अप्पणा न गिण्हंति नो वि गिण्हावए परं।
अन्नं वा गिण्हमाणं पि नाणुजाणंति संजया॥ द. ६.१४

ब्रह्मचर्य शिक्षा – मूलमेयमहम्मस्स महादोससमुस्सयं। द. ६.१६
तम्हा मेहुणसंसग्गं निग्गंथा वज्जयंति णं॥

अपरिग्रह शिक्षा – जे पावकम्मेहि धणं मणुस्सा समाययंती अमयं गहाय।
पहाय ते पासपयट्टिए नरे वेराणुबद्धा नरयं उवेंति॥
(उत्तरा. ४.२.)

अप्रमाद शिक्षा – संसारमावन्न परस्स अट्ठा, साहारणं जं च करेइ कम्मं
कम्मस्स ते तस्स उ वेयकाले न बंधवा बंधवयं उवेंति
(उत्त० ४.४)

* { जीना चाहें सर्व ही, मरण न चाहें कोय।
{ चाहत हैं सब जीवना, मरण चहै न कोय।
प्राणिघात सो पाप है, तजैं साधुजन सोय॥१॥